

II-158

भारत सरकार
केन्द्रित प्रशासन
केन्द्रित प्रशासन

पुं वसुधाय क गिरस
 डा कपाय ए कपाय
 डा डाकसुव ग डाकसपक
 डा विधुन घ निरुवस
 डा स्वडाकसघ ह खडाकसबत
 डा क्लानिखास व क्लानिकास
 डा मिखातिपां घ डाअमिखा
 डा बाहातिपां डा हंसकास
 डा पाकातिखं म नपातिस
 डा इइतिरखं भि इइतिरखं
 डा कुरुस ह कुरुस
 डा क्लसस ० क्लसवास
 डा खानस ७ क्लसत्याक
 डा कथुस ७ कथुस
 डा नगलस श नगडस
 डा काभिस क क्लसिस
 डा लिंगस थ लिंगस
 डा पनचाय द पनचाय
 डा खननिपां ध धीखयनिरखी
 डा रुनिपां न खनपांतिरखी
 डा गहायपिंयां प पचिंशका
 डा पालितलनिखं रु लिगुआस
 डा दुतिपविंयनिं रु पविंयति
 डा वाअतिरखी म गुवातिनी
 य हतावतिरखी य हतावतिरखी
 न डाकस न डाकस
 ले डाअनिस ले डाअनिस
 वे खडाकस वे खडाकस
 डा खडाकस डा खडाकस
 म डाअमिखा म डाअमिखा
 ह खडामिखा ह खडामिखा
 क वसुधायस क वसुधायस

न गुलीष
 रु रुनिरखी
 पाअतिरखी
 लिंगस
 कुरुस
 नगडस
 इइनिपां
 गलपायस
 काययानिखं
 हतावतिरखी
 मिखातिरखी
 कसपायनिपां
 कपायस
 वसुधायस

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमः श्रीवक्रसत्वाय ॥ ॐ नमः श्रीहनुकाय ॥

न्यागपिकाययातनसंवासददंकाखन
गुनृदाद्यास्वांराजतायजुक्तडादं
लखसाइदूपधनलसुधुलतस्यतीर्थ
कनू२दह२पच२रुव२दिनि२ह२उंका
हुनू२मन२वन२वधिमातसहजपुतिमधुतधनीयकल२तप२रुगवन्मादित्यमवबूधकूदन

जथवमीधिवामनविधिमाह ॥ ॥ ज्ञापा
मगायकंतिथेसडाडास्तोनयाच ॥ थन
दवयामकुनजाप १ पाडाडागंखसतस्य
मजुधयाय ॥ मकु ॥ ॐ सव२सिनि२केव२ १
ववकावधाधव२धिवि२धुन२तव२तिवि२
१

१ विरु

नमो भगवते वासुदेवाय ॥

वक्राधनदजविदवगधलीचवधकमलायजुर्धपुतिरुखाहा ॥ राकलप ॥ ऊजामाननकुल
ग्वलपसदास्वास्तनइहायक ॥ तीर्थया
स्वाहा ॥ लखहुयमकु ॥ पवसपहावपूजा
धानदयंकन ॥ ॥ थनन्यागपिका
पनायाध, कंशवनापन्यागधवसुपनाः
॥ सिधुतगजगमइलसाज्जादिपूजा ॥ दवपतिपादिपूजामाहनिरुय ॥ आदिका ॥ नालज्ञाय
मलुलधिल, किरन, लंखवलि ह्यथ ॥ नाथपूजा ह्यथ ॥ जगमदवइलसा ॥

लखहुयाडा ॥ चापलधर्त ॥ ॐ बालबुल ॥ रुद
यास्य ॥ कनकनमइयकं ह्यहय ह्यसजु
यक्रदवयाथस्यरुपाविमानथस्थ
या ॥ १ वायगुनूमहुल, पच२गवद्या
॥

थनक्रुनक्रदवपचविगतिकानसुहिदिहाडाकागवडावजताजुजुक्रतडाहादाहासांरु१हा
हासांरुअगुवनडासांरुदवयामूलमनु
मसदुथनदवयासांकायाअन्याअपास
दयगर्हिर्तवीजकवरमापवडायह॥थ
॥दहिर्तदवयानिसादकावसुंन्याअपा
खालवलिंसमसुंन्याअघलयाहडानन॥हानक्रदवकापलपूसतय॥थनीलिअग्निस्त्र

नजापयायधर१०८धूनहास्यन्याहाघ
इथन॥दवत्वइविकहोलपराहाकाव
नपचरविगतिकानन्याअघलमचिय ३
सतियक॥दवपूजायाहातवनिवल
हानक्रदवकापलपूसतय॥थनीलिअग्निस्त्र

पनअग्निहृति॥थनदवपूजात्याअघलसस्त्रानतस्य॥हावना॥वंकावजंवलरूपीविविक्त॥४॥
वजांमृतादक००हू॥उंजा०हू॥हू॥यनन
महातकस्त्राहा॥उंजा०हू॥हू॥मगुकिनीज
मिविविक्त॥स्वहृदीजमयूसैहानमधु
नदवीरूयवाधिविरुपंप्राहृतामूस
यदवताहानदवतयावकीरुतामिश्रया०॥धूपनिगजंनविधिथपनिजमनेदजाया०॥धू

हानामृतीरुतंप्रवमानवजमयंडंतक२
लरूपी॥जलकलजासर्नदवतावजंमहि
लमोनीयसमयचक्रप्रवग्ममहावाण
कलमीरुतंविविक्तयत॥विक्रयसम
धूपनिगजंनविधिथपनिजमनेदजाया०॥धू

प्यन्यासः दवता कृतिः यधर्मा ॥ अकारमुख ॥ दक्षधर्मा ॥ धन आहूतिविनुधा १००० ॥ अर्या कृति
 ॥ धन दग्ध वलि विय ॥ रुजत पात १ आग
 यक मान्सा कृति इनुगीत काला ०० ल ॥ पू
 श्रुवा पात सप्तस्य इनुया गिनि पति श्रुवा
 पूजा दवल वक्रा ॥ दवसन क ॥ धन
 कर्त्तन घन पूम्ह याय ॥ आसि धोदा ॥ वे सवा हाल आदि सान साल क माल सा मूपा रि न सा

मरुल सादिग्वलि विनु ॥ पक्षधवा हा
 धुइ इनु ॥ पक्ष सा वि या र्य त ल का स्य
 पार्थिनु ॥ धन वत का व व्या व्या लि हा ०
 पक्ष सा विल हि व क ॥ धन मगुल थिल

४

पूजा या च क लि मि वा स पू वा कूर १ अ इ उ पात १ दक्ष धर्मा १ श विय ॥ सा ह स लून मूल डा हान
 खाल मूल सिङ्ग लया सा ह लि त य का पल
 स्य सान सा र क सि व लू क डल सा कृदि ०
 ब्रह्म म स इ य अ ना क र क मा प न स ग व न क
 लि ष्ठ य ॥ धन लि गु वि ध य स न्या ग य ल
 रि न पू स्य ल ख ध ल थ स्य न प म वा स्य न्या ग य ल त य न्या ग व लि पात १ विनु नि र्व व लि वि य माल

न विनु ॥ धन धूस्य लि ख ले खि पो त न द व वि
 डा डा गु लि का प ल न वा स न क ड ल न व या
 य दक्ष धर्मा पूजा ॥ अ वा कृति वि स र्ज न ॥ व
 क य न ॥ पक्ष ग य सा इ इ न हा स्य कूल
 विनु नि र्व व लि वि य माल

॥ श्री गुरु ॥

आगदडाहलसांलंपूयछाप्रदवइलसांसांनसालकमूमाल॥लंगरुकाकाहुयदवयूजाधूनडाडाया
पालिचेतकालरुहपूजायायसूबलासला
साविश्रुदयकमाल॥आगममइलसां
यइना॥ ॥००॥तिन्याठापिकायविधिः
॥००॥००॥नमःथीवजसत्वाय॥ ॥धनंलि
वंगभलायजअरुमलाम॥थुगिछापनायाय॥००॥यायशुभमधुलपचरगया॥अधनेसिधन॥

मधुलथिसलंखवल्लिछाप्रदिसमाधि॥कडापूजात्याठाघवसंपूजा॥धनंलिबंगभलासत्वायनदृश
तसंखावना॥ ॥यबलंवरु॥वीजनः
पानधमला॥नरुगानिरुठि॥नसर्वतथागत
रुगामिचिन्त्य॥आपानिलाऊन॥विधि
॥धनवंगभलासवजनथिसंजापा॥००॥
हसमयह॥गी॥त॥००॥००॥वजविहसमयह॥पीत॥००॥००॥वजविहसमयह॥वक॥००॥००॥वज

पचाश्च साहा ॥ धमस्तु आ कर्म धयाय ॥ पाद्यादि निला ॥ न ॥ लाहा शिवका ॥ विधिर्धं पूजाया ॥ सु
 रुनल ॥ धनसुवला सलाह कं विरुः
 मया लडा झा व ॥ ऊ ऊ मानन लूपे तिम
 पतिरु ऊ प्र सुवाया गुलि वी जा रु व दे
 धन द व पूजा याय ॥ पं ला दी सु रु ॥ द व या रु
 न द व या म रु न सा प या य ॥ ध ध मा ॥ अकार म ख व लि ॥ गता रु व धी व ३ प द प ॥ नृ ग उ स व रु न

धिय ॥ ३ सु प्र ति छि त व रु स्वा हा ॥ धन द रु धा नि स ला व द ह ल प ॥ वा रु पू जा ॥ रु डा पा रु १ व लि वि
 र ॥ पी धा दि य जा ॥ म रु स धि ल स्वा त न ॥
 द व रु ल सा प रु सा वि रु १ द य क मा व गी
 रु ॥ ग ध व रु ॥ वृ ति मू ल वं ग रु य कि यां वि
 शा वृ न रु डा न्या ग इ ध न या रु ॥ रु या न्याः
 स्थ प ना या य ॥ इ डा रु रु न्या ग लू य रु ल सा य रु मू ला व ॥ १ वा रु गु रु म रु ल प रु ग व ॥ आ ध न सि ध र्

गङ्गा गमनं च सा पञ्च सा विजादि पूजा गदवपति पादि पूजा मादनि साधन आदिका लाल क्राव
 यि नाय पूजा रक्षा च मधुलक्ष्मि नम
 माधि पूजा न्या गदव विधि थ पूजा
 स्पृष्ट पयाय वाक् गगन श्री अमूक
 तनार्थ जी हृदय क्रिया युक्तं सर्व सुख
 स्वरावन पवि (ग) स्वगवी नः सि विनि ॥ धार ३ वान ॥ धन अर्घ्याय ॥ साइ इ ता यजू क त रू
 स्को य का उ गी त प वि मान थ श्रव ॥ जिस
 धून हा ज कुल दव या क स्वा न रु हा ल ह
 सव ज वि घो वा र्ज न म सु त क डे मि शु मि ८
 हि ता थ य यूष्मा क पू ज ना य र ह्ना ना मृ

लं पच ३ वत्त घा हा स्त्री त स्यां दाय क वा क ॥ उं स व २ ति वि २ क व २ रू व २ द द २ प व २ द व २ दि वि २ हं २ उं क
 व व क व हा ध व २ धि वि २ धू व २ त व २ ति
 ति म धु त ग वी न क ल २ न प २ रु ग व न
 अ वि द व ग (हा) य ४ अ मू क द व ना च व हा
 पू जा ॥ थ न न्या ग द व स वि स्यां त या धः
 स्ये आ चा स्ये न का मू उ व ज ता य अ क त घा हा स्त्री न जी ८ द व या म कु न का प या च ॥ धा १०८

धनदावताय नमः दवस्कृत्य स्नानं कृत्वा न्यासाद्यनन दवया कलय ॥ मज्जिलसा दवया कृतान वातास
 कृतकन गह्यं कृतकन सलयं ॥ न्यासाद्यल
 तियक ॥ थन नं ज रुया न कृडा पापन अ
 निह्यं ॥ नाम क रूमा याय ॥ थन प विक्रम
 मर्थक ॥ थन ज रुति विनुध ॥ १००० सं
 ७ ॥ दिग्वलि विव ॥ थन मा सा रुति ॥ प व र्धना हायक ॥ गीत प विक्रम ॥ प व र्धना विग्रह यत्

॥ थन मधुल धिल स्नानं थन दृढ प रूयाय आशिषो द दकृष्ण पूजा ॥ समया वज्र ॥ (शोषा रु ॥
 गद्य वज्र ॥ रुति न्या मलय विधिभा ॥
 सत्वाय ॥ ॥ पाद स्नापन यात दय कृ वि
 मय ॥ न व वल प व र्धन मा धम प व र्धन
 श ॥ धा व क ड म यात रुता ॥ ख य व सि की
 कुमायी रूत का ग व रुति रुता सि त गु रू सि अ गु रू पं गु रू स म व र्धन ग न्ध प व र्धन मृत ल व न पूजा

सादस्तापनः॥

जंगू आसंखदि सुमिपय कापनक १४ पचगव्य लंकावलक १ शायुस्तु रूपापात २ अद्यावमालः
कनिसलामालका रंखग्व १ सिजसवासि
इनभायुदाय ॥ ॥ पादस्थापनविधिः
वाग्वउऊ विधिथ ॥ ७ वाय ॥ गुग्गुमगुव
स्नानन ॥ डिममाधि ॥ कलस सगुन पूजा
सिजलघल दवपजा ॥ रावना ॥ स्नान द्युलतस्य ॥ अंज पवमानूऊ रंजयनूपा न्ध्यात्वा ॥ अतः
अखवाथुतिहवा ॥ ॥ ॥
मारु ॥ पयवाय ॥ रिगुलि अन्तपापा २०
पंवगव्यसाधन ॥ सिइवत मगुलथिल ॥
अग्निस्थापन अन्तकृति ॥ धन अन्तपावा
अतः

वा अग्निस्थानमर्चु ॥ अं वज्रकर्मेकं ॥ अं वज्रवदहं ॥ अं वज्रयज्ञहं ॥ अं वज्रसंधिवं ॥ कलसलीखन
हाय ॥ पचसमृतादिस्नान ॥ पलां धंरु
रुमस्नान कसम ॥ डिरीगु ॥ कसं रायू
थनदवदयकथास रूमोसपूजा ॥ स्ना
नदिग्यालनागन वसुधार्वा वृद्धवाधि
धूपादि रिश्वस पूयुगग (ह) स्थापयत् ॥ दवता कृति ॥ मया वायु दहो डाने ॥ ॥ ततां अंरुखमि

तिमकु नगुन्या कृत रसाग रू लं हं ॥ तिमकु सव कप वतान मयी विहाय ॥ ॐ मदी नी वजी रु
 ववज वन्ध हं ॥ ॐ तिमकु मधियान ॥ ॐ
 ना ॥ ततः सव्य क नदा नू हू य प न जी र वा
 नी हि अ ए थी सी वा दि त न नि स नी रु सा
 रू पि ना पी त ए थि या रा व य ॥ ॥
 ना यि ना ॥ वर्या न य वि ॥ ॐ धे न उ मी पाल मि ता रू व ॥ य म मा व व र र म ग व सि हा दि वि मः

ना ॥ तथ मा व व ली जि ला वि हा रू व य म म द ॥ ॐ ३ प ७ य ॥ ॥ थ न रु मि स अ र्घ या न क ॥ प य
 व ल इ वा कृ तु अ कृत ना य इ इ री ख लं
 वि ए थी ला क पा ना रू स व व ल स मा पू रू
 व क रू स ल व प्र पु जि त गृ ही ला ॐ द अ र्घ
 स्वा हा ॥ ॐ ति पि नू वा य ॥ नी वा ॐ न ॥
 ॥ थ न कृ लि ग रा व ना ॥ त द नू कृ दा नी कृत क रू क र्म स्व रा व मि हा य ॥ ३ न ति १० कृ लि

सधारपुन्य॥ धनघावकयिडाक्या हुरुपजा॥ हमीसघावकयिडाक्या तवसुकाचूरस
 ताषयाहं विद्यदकृष्ण॥ कलिलक्याय ॥ घावकयक॥ निम्नय॥ मरु॥ घश्चाट
 य२ सर्वपापाननाय हुरुह॥ घाव
 तताक्षमरावतो॥ तताधनऊनविद्या
 ऊढमकृष्णविद्या विमलसीतवि
 गलं वाहिकाग्निमावाक॥ सर्ववाहनं सीकरमिसात पूजायातक॥ ऊढमाने॥ अर्चनं चालव

क्लाव॥ निष्कमन॥ वालाय॥ लपलडाहापवतं अर्चनाय॥ सिद्धयवतं यतीव हन मल पप्रवाग
 पुष्पराग पचममृत पचममृत माधवसि
 व॥ लपलियादवनं लूयाकृष्णतय॥ ध
 दनेरिनक॥ दवदिवता घावथधनक
 ॥ धयादवनं दवयापिवदिवक॥ धया
 काधयादवनं सिद्धलपतिनका पूयधयादवनं वसितय॥ दकृष्णपूजा॥ दमवविष्टय

ॐ तिपादसुपनविधिः ॥ ॥ गुरुम् ॥

ॐ नमः श्रीनेत्रात्मने ॥ वसु मधुललीनं ज्ञेयं कारवीजं कर्तुं स
नादि पूर्वकं परिनम्य सर्वद्वन्द्वं सुखं सुखं पर्यङ्कनाद्यस्ति तं
नात्मा कुरु कुरु मूर्खा उर्ध्वपीडितं लक्ष्मणस्य कात्यायनस्य कृतिनां
कु काल ललजिह्वा दक्षिण कर्णधनी वा भक्तनाटकखः
ह्रीं गधर्मा जगि हिमवृषिनी कवलनेनात्मा विरावयत् ॥ ध्यान ॥



१३

पराशरकाव्यम् ॥

ॐ नमो गुरुगवये श्रीपञ्चवक्राय ॥ अथ पञ्चवक्राय विधिमाह ॥ धनस्थानतस्तं ॥ रावना ॥ रुग्
वती महाप्रति स रापुं कारवीजं विराय ॥ तत
कारवगिना गुरुद्वन्द्वं वाधिसत्वादिन विरा
महाप्रति स रापुं मूखान् सपविवा रां न पूव
वक्रहं ॥ वजां क्रुमदिगधूपकपूरं निल
वायु ॥ उच्छ्राय महाप्रति स रापुं ज्येष्ठं प्रणिदखाहा ॥ धनपूजा ॥ गन्धश्रीखलु ॥ दूष्यादि यन्त्रं ॥ दीपः

॥ अथ पञ्चवक्राय विधिमाह ॥ धनस्थानतस्तं ॥ रावना ॥ रुग्
खरुदयजुकारं वन्दु मधुलं तस्यापविषं
स्य सत्वाथं देवा कनिकनिदुवर्नं गुवाः
तागमसदहादृष्ट ॥ आकषण ॥ उवज
अनलाहागि यक्षा ॥ धनज्येष्ठं हवमृनि
॥ गन्धश्रीखलु ॥ दूष्यादि यन्त्रं ॥ दीपः

शीतललाङ्ग॥ पूष्या न्याहा॥ पंलाघं सुत॥ जायमनु॥ उं मतिधनी वजिधिमहापुति सववक २ मानाव
 रुं २ रुं २ स्वाहा॥ यधर्माद्यादि॥ दकृष्णसु
 वलि २ यथा॥ त्यादनदिदृक् मादनरुन॥
 सीपलिदायनी॥ गंयकृन्धवधुर्गवज
 दनीयजा॥ खानकस्यलावनो॥ उं आर्य
 यथा॥ धूपकं ककुवि॥ यत अर्थ॥ नीरलावन॥ उं आर्य महासाहस्यप्रमदनी जूर्धपतिद

वधुघटितवत्काला॥ उकिदधिजीव
 प्रियंगु॥ सुनि॥ पुतिस्वनमरुस्यसर्व
 सत्वात्मकापमा॥ २ ॥ यनसाहस्यप्रम २४
 महासाहस्यप्रमदनी निर्दुकावजुविराः
 आर्य महासाहस्यप्रमदनी जूर्धपतिद

स्वाहा॥ स्वाहा॥ पूजापूष्यादिनीलपंलाघं सुतित॥ दीपकुरुते॥ जाय॥ उं नृमृत्तववव २ प्र
 वनविशुद्धरुं २ रुं २ स्वाहा॥ यधर्माः
 पिष्टिर्कवर्म॥ दक्षिणलं वज॥ रुले
 कृतालीमलीषधर्म॥ इदीकृतागनीद्वीजा
 पूजा॥ खानकस्यलावनो॥ उं आर्य महाः
 यथा॥ धूपकं ककुवि॥ यत अर्थ॥ नीरलावन॥ उं आर्य महासाहस्यप्रमदनी जूर्धपतिद

त्यादि॥ उकिदधिघटित॥ वलितिलादक
 गुजमति॥ सुनि॥ कुरुवधुमहासाहस्य
 धक्कीनमाम्यहं॥ ॥ यनमाहायवी
 मायुर्विमकावजुविराव्य॥ धूपकं ककुम
 यथा॥ धूपकं ककुम
 यथा॥ धूपकं ककुम

पंलां घं सुतिता ॥ दीप (गो व स र्घ प र्ते लं ॥ पूष्य न्या ॥ जाप ॥ उं अमृत विला किनी गर्ह सै व कृती आः
 कर्षनी ह २ रुखा हा ॥ यध मी ३ सादि ॥ कुकि दधि मधू ॥ वलिपीता दने ॥ पिष्टि कं
 ख युवति रु ल कि म सु द क धा ॥ लू थ म हा क ज
 हा क नी ॥ वि धां रा रु म हा मा ना मा यू नी प्र
 न क र्ष रा व ना ॥ उं आ र्थ म हा मी क व नी कु
 ॥ अ र्घ म हा क प म रा ग ॥ उं आ र्थ म हा मी क व नी कु र्घ प ति रु खा हा ॥ स्नान ॥ पूजा पूष्या दि व का ॥ पं

ला घं सुत ॥ दीप क रु ते लं ॥ पूष्य न्या ॥ जाप ॥ उं वि म ल वि पू ल ज य व र जू म त वि व र्ज ह २ रु २ रु
 हा ॥ यध मी ३ सादि ॥ कु कि खे सु की व ॥ वलि व का द न ॥ पिष्टि कं पा प उ ॥ रु ल वः
 य सि ॥ द क धा सु व र्ध प म ॥ सु ति ॥ रा व व
 प्र वा ग म र्ध म दि का न म रु ज ग ना न व ॥ ४
 व ना ॥ उं आ र्थ म कानू सा रे धी र्ग का व र्जा वि
 म म हा म कानू सा वि र्ध म र्घ प ति रु खा हा ॥ थ न पू जा ॥ पूष्या दि व ति ॥ पं ला घं सु ता ॥ दी प ती म

[illegible]

विष्णुधनितुल्यवर्हं शृङ्खलाहा ॥ यधमोवा
 पितृकर्मथो ॥ हलैर्जवीर दक्षिणलं प्रस
 ल्लकविजमा ॥ काखादृष्टं दनीदवीनमो
 ॐ निपचक्रा पूजाविधिसमाप्त ॥ १७
 खोनद्युलातसीजोदित्यया लावना ॥ नरुः
 तसुखा ॥ दक्षनयकूपप्रवर्जवर्तनाजोदिः

हंसमा नूतं कृष्णपालसन्निहं वलाहयकगार्यानुविजुक्तमृदमरुमं ॥ जंवेरुतातिभक्तवीरिणाय ॥ ३ ॥
 धूपकर्पूरवाज्यधूम्रि ॥ ३ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
 वहीवकीवकाभपपूष्यसहभायगुह्यवासपू
 नवकृष्णपुजाकिन्त्यनरहितायजुवयश्चरुगव
 ॥ ३ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
 स्यजीयकृत्स्नप्रीतिकारुवात्सानिर्पुष्टिकृत्सामायज्यधूम्रि ॥ ३ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥

दमरुमं भजं वेरुतांतिभक्तकीर्तिराव्य॥३॥
मथनाद्वायव्यं रुक्ताय वक्रसंज्ञाय ह
व्यगन्धयक्षा प्रवीणाय हंसाय दशदा
न्मनूष्यानां हिताय यक्षदंष्ट्रहमधुलम
यहाववलिचप्रतिगृह्णतांश्च न भ्रातृभ्य
प्रतिष्ठास्वाहा॥ पूजास्तुतगन्धधूपवि

भिर्धं पूजा ॥ पूजा मनुभा उं श्री गं ग व स्वाहा ॥ दीप (चक्र) ली ल न ल ॥ रु कि द धि रु क ॥ वि ही ता यू हा मू रु ल म धू
 रु ल ॥ प ल स्वा न ॥ पि रि का उ ल म धि ॥ द कि
 का दि जी व न रू स वा रु न रू प ह ॥ नि ग क र न
 पू जा य ज्म क स्य स्य स वा द्या सि धि का म ना थ
 स ए य द्य मि ग रू ख पु ति हा थ दि कि र्म स ए द्य
 ॥ जू (नो) का ग व थ मा वू रं व क रू रू ही म रू ली प र्म ॥ स व वा म रु जा रू यी रु क हा व मू धु वा वि र्म उ व रू त म रू ली व वि

रू म रू रू ख ॥ रु कि ॥ क रु रु रु ख रू रू रू का रू रू रु ल प्र
 मा म्म रू ॥ उं सा मा यू क्री ग रू रू व रू रू रू ता य रू रू रू
 स रू रू वा ग पु ग्ग रू रू रू रू रू रू रू रू रू रू रू रू रू रू रू १८
 व या म्म रू ॥ २ ॥ जू थू रू रू ग व पू जा ॥ हा व न

रु म्म ॥ धू प धू गु ॥ जू र्ध व ल रू रू गु प र ॥ उं न मा रु ग व रु रू रू ग ॥ रा य म हा द व पू जा य ए धी ग रू रू रू रू ता य
 रु रु व रु रू रू प्र का लि ता य रू क वा स पू रू धू प
 व रु धू क रु ल द व ता य द व दान व कू रू रू रू रू
 नू रू ना रू दि ता रू थ य रू रू दं ग रु म धु ल म ॥ जू
 प हा व व लि व ॥ प्र कि गृ द्ग रू ली न मा रु रु य स्य कि
 रु मी रु ता य जू र्ध पु ति रु स्वा हा ॥ पू जा ग रू व रु क रू धु न ॥ पू जा म रु ॥ उं व कू रू ग कू मा रू य स्वा हा ॥ दी प ॥

दी प ग रू रू रू रू प वी न प्रि या य द्य ग रू रू रू रू य
 व रु कि न्य व स रू दि ता य जू व रु व २ रु ग व रु
 नू प्र वि ग्म २ रु द म रु रु ग रू रू रू रू रू रू रू रू रू
 य रु रु रू रू रू रू रू रू रू रू रू रू रू रू रू रू रू रू

कठुर्गेलं॥ हकि गुठरु कं रुल किं सि॥ पिष्टिका मादक विहीन कादकि धा थूसा अत्यय खान॥ सुति॥
 विवहा कार्षि संतज सु (गा) पवमं शोकि धं॥ क
 मवाय रुमी सु ता य दूय वदव ता य जू मू क
 न्यर्थ वजग घटि न जून नानु लुत्य मरु संप्रय
 कि धा संप्रय याम्य हं॥ ३॥ अथ वृध दू
 अरुदी॥ सवयाम रुजा र्णा तु द धान मिषू कार्म की॥ च वं वृध विहा द्य॥ धूप सिद्धा य॥ अर्घ्य सुवर्धू पृथ्वी मा ग॥

माव कूल सी रुतं ला हिता गन मा म्य हं॥ उं जी
 स्य स्वर्वा द्या सिद्धि का मना र्थ सर्व वा ग प्रभा
 द्या मि॥ वजग घटि न जून नानु लुत्य मरु संप्रय १२
 जा॥ रावना॥ दहि (द्य) य द्या वृट् पी ना रु यं क
 धूप सिद्धा य॥ अर्घ्य सुवर्धू पृथ्वी मा ग॥

॥ उं न मा वृद्धा य साम सुता य वा हि धी पूजा य अथ का मा मी सा वि शु क म हो रु स द्य भ य व रु सूर्य द व ताः
 ता य रु वि डा रु पृथ्वी धूप गन्ध य ह्वा प ती ती
 कि न्य न व स हि ता य जू व न व श रु ग व न्दा
 पु वि श्व शं दं अरु क ग न्ध पूष्य धू पा प हा
 य रु क स्य पी ति क मी रु ग वा न्या न प रं भा कि
 ग न्ध रु सु वि म लि र्णा पूष्या दि पी ती ॥ पूजा म रु ॥ उं वृध य स्वा हा॥ पृथ्वी प हा व पूजा॥ दि य र्ही का वि

प्रिया य क म ला पूजा य द व दान व क रु भु पु ज
 न प रु हि ता र्थ य दू दं ग्र ह म गु ल म (ध्व) ज नू
 व व लि व प्र ति ग ट क ता २ न मा रु त य स्य दि
 पू र्ति क रू वृ ध य अर्घ्य ग ति रु स्वा हा॥ पूजा॥
 उं वृध य स्वा हा॥ पृथ्वी प हा व पूजा॥ दि य र्ही का वि

कं॥ सर्वपते लं॥ विहीः का॥ पीतवसु सिरथि॥ अलगकरुलवपसि॥ लइममधि॥ दकमल॥ ३
 वृद्धाय सा मस्तनाय वादि॥ पूजाय वजः
 थं॥ स्वर्धुदकि॥ प्रतिकार्थं॥ स्वर्धुदकि
 निकानि॥ शव॥ अपधवक॥ पद्मासनादि
 वरुस्यति॥ पूजा॥ लावना॥ नेअस्य गजमानु
 कं॥ वदवदांगपावर्जवर्तुदहस्यति॥ विरोय॥ धूप॥ चतमधू॥ जूर्ध॥ स्वर्धु॥ वाय॥ ४॥ नमा॥ वरुस्यत

य॥ अंगवस्तनाय वरुवदाय॥ दवगुवपाध्याय॥ पीतवास॥ पूष्य॥ धूपदीपगन्ध॥ यहापवीतप्रियाय॥ जूरुस
 कूलदताय॥ दवदानवगन्ध॥ वासवगवृद्धकृता
 नपतहिता॥ थं॥ य॥ ३॥ दयुदममुलम॥ ३॥ न
 लाववर्लिचप्रतिगु॥ कृता॥ २॥ नमा॥ सुतयस्यः
 कृववावस्यत॥ य॥ जूर्ध॥ पति॥ दृष्टा॥ ला॥ ॥ धन
 पूष्यवागविहीत॥ दकमलं॥ पीतवसु सिरथि॥ अलगकरुलवपसि॥ कूलसि॥ ममधि॥ पला॥ धं॥ सु

दीपलभयुक्तमेव सर्वपतेर्लुगुनिघ्नपरविकं॥ पूजामन्त्रः ४५ ॥ ईहागमदास्यस्वाहा॥ मुक्ति॥ सूर्यवा
 धिधिधियावुर्दंभस्मावकावर्नप्रहं॥ व
 लयावाव॥ उदहस्यनयसिसुतायव
 कायज्मकस्यस्यस्वर्वाहामिदिकामनाः
 निर्यातयोमि॥ ४६ ॥ दकधर्मपीतवासेप
 अथयुक्तपूजा॥ स्नाननस्यैरावना॥ पश्चिममकवावुर्दंविप्रदककमधुलं॥ हिमकूदन्दसैकार्गनाः

त्रपाठाकृपानिर्हृवावस्यतिन्नमाम्यहं॥ रु
 द्रुदयदवानां गुणप्राप्त्यर्थं कृपाय देव
 र्थं सर्वभागपुष्पान् स्मर्य पीतवास्युर्गदुःखं २१
 निष्कार्थं दक्षिणसंप्रदाययास्यहं॥ ४७ ॥

नागमुविदाम्यवं॥ उर्वरुर्लगावर्गविहाय॥ धूपकगुहाशील॥ अर्घकयर्कं नृप्य॥ ४८ ॥ नमः शुक्लाय
 रुगुसुताय अमृतगुणप्राप्त्यर्थं देवावनकूल
 ताय कुवर्गमावृणोय देवदानवगन्धर्वसुवर्ग
 वन्दानपतहिताथय ४९ ॥ दयदमधुलमधु
 पलाववालिक्वप्रकिगृह्णतां नमः॥ सुतयस्य
 दिक्कूडं राग्रेवाय अर्घ्यप्रकिहृत्वाहा॥ यनपूजा॥ गन्धश्चैव गुणः॥ पूष्यादिशुक्ल॥ वपस्वीदीपयुक्तं

देवताय शुक्लवासपूष्याधूपगन्धयहापवी
 रूजकिन्त्यकनसहिताय जवतव २ रुग
 अनुप्रविश २०० दमकृतगन्धपूष्याधूपा
 कियतकस्य पीतिकवारुगवान् अन्निपू

कर्तव्यं जापमस्तु ॥ उंजस्तु वा रुमाय स्वाहा ॥ विही कयगुदकक्षतायुसंल सिवायि इत्यवसि रुलनाः
 सिद्धुगु गुडपिष्टमद्युक्तं ॥ उंयुक्ताय रुगु
 स्वस्वार्थकामनासिद्धिं सर्वनामपुत्राभक्त
 मि ॥ उं दं दुव गदकर्म ॥ उं नित्यार्थसंप्रदाः
 रा रुं दुव मे सने ॥ कुरु कुरु कुरु कुरु च ॥ दे
 पूजा ॥ खानतस्य रावता ॥ वायुयंक दृपा नृदं लिन्ननी रंजि नय रं ॥ दधुमयदकं वं री नं अक्रा खरुलस

कूर्वी चर्वरुतक्षानिध्वरं विहाय ॥ धूपगन्धवस ॥ अर्घनी ललाटात ॥ उं नमः ॥ अनिध्वनाय अदिश्व
 गायत्र्या गार्ग्यं संहताय द्वादविषयसंरु
 नीलुवा रनीले पूष्यधूपदीपगन्धयहापवी
 ध्ववा सुवकुरु ॥ उं जाकि न्य कुरु संहिताय अ
 दमधुलम ॥ अं नू प्रविश ॥ उं दमकुरु गं न
 नमास्तु यस्य क्रियते तस्य पीतिका वा रुवमाकि पूर्विकुरु कुरु कुरु वधुय अर्घ्यं उति कुरु स्वाहा ॥ पूष्यादिह

ह्रीं पूजा ॥ गन्ध सर्वगन्ध ॥ अिलखादीपक ह्रीं जापमन्त्र ॥ उं ह्रीं वरुणाय स्वाहा ॥ विहीमास दानदा कः
 कपगुप्ता कान्तसिन्धु शुभमदमान् समि
 ताय जूझा स्वदवताय मम ज्ञायमावागन्धका
 वधसहितवज्रकटिकटुख्यं जूहं नियोक्त्या
 संप्रदाययाम्यहं ॥ मुनि ॥ ग्गामाहं वीरुवन्द
 नं ह्रीं वरुणं नमाम्यहं ॥ १ ॥ अथ गार्हपत्यं ॥ खानतसी ॥ रावता ॥ उहवमद्यमावृद्धं जूहं कार्याजन

उहं ॥ सव्यवामजुजाख्यां विजुविधूदिनध्वने उर्वरुणिद्रुनि राग ॥ धूप सर्वधूप ॥ अर्घ्यलावत ॥
 उं वाहवसिंहसुताय जूहं तपि सायकलि
 वासः पूष्यधूपदीपापहावगन्धयह्लापवीत
 ताकिन्यकनसहिताय जूवतवशरुगवन्द्या
 नृपविभू २४४ दमककगन्धपूष्यधूपदीपाः
 म्मीयककमस्तपीतिरुवगमकिपू विरुकां ह्रीं उं वाहवज्रुर्वधुनिद्रु स्वाहा ॥ कर्पूष्यादिपूजा

सिंहासन ॥ दीपत्यक्तर्त्त ॥ पूजामस्तु ॥ उं ऊं नमः कुरु स्वाहा ॥ उं उं मि दधि विमान ॥ रुद्र सपसि ॥
 आसामधि ॥ वायु ॥ उं ऊं नमः कुरु दयतायदा
 न्यर्थं उं ऊं नमः कुरु स्यात्सर्गं उं ऊं कयाम्पद
 उं ऊं कयाम्पद ॥ रुद्रि ॥ हिमं रुद्रं रुद्रं सकारं
 उं ऊं दयन्नमाम्पद ॥ १० ॥ रुद्रि नवग्रह
 नयनं आशुवागवकामनार्थं सर्वं वागपुं
 ॥ रुद्रं रुद्रं रुद्रं स्यात्पुं मिदार्थं रुद्रं रुद्रं
 दवास्त्रं नमस्तु ॥ सिद्धिं दीतुं सर्वं सत्त्वानां ॥ २५
 पूजाविधिसमाप्त ॥ १० ॥ रुद्रं ॥ रुद्रं रुद्रं ॥

उं उं नमः श्रीवज्रसत्त्वाय ॥ ॥ अथ अथ जनकारी मन्त्रं क्रियाविधिमाह ॥ ज्ञायी इमं लक्ष्मणं नव
 ग्रहमस्तुलनाय ॥ धनं इमं लक्ष्मणं लक्ष्मणं
 पद्मं गायत्रीं वलिं धनं लक्ष्मणं ॥ १ ॥ वायुगुरु
 माधि सर्वं लक्ष्मणं दिपूजा ॥ धनं दयपूजा ॥
 याविधिं धनं विजुमनेयाय ॥ ॥ धनं
 नवग्रहमस्तुलनाय नवग्रहं नवग्रहं नवग्रहं नवग्रहं
 नवग्रहं नवग्रहं नवग्रहं नवग्रहं नवग्रहं नवग्रहं नवग्रहं नवग्रहं

अथ जनकारी मन्त्रः ॥

हस्तजायाचक ॥ धूमिधूसीलिवलिबिउधकालिमधुधिलखानकनआशिर्वादसुग्वगवकितापृ
 डा ॥ धनलिआगमसुसवाकलपूजा ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ धन
 सतिरुद्रद्रोपाथपलेपयहसग्वल्कम
 ॥ धन ॥ वास्यगुवमधुलपवगयाद्याय ॥
 स्थापन ॥ अग्रकृति ॥ धनमज्ञाकथपूवान
 धनदयकलसाग्रहमारुकाप्रतिमादवताज्ञाककर्मआदिर्नविधिथप्रतिहायाय ॥ ॥ धनयाथज

नकायायकलसास्यरुयावस्वलिकसकयगुवमधुलदनक ॥ मत्तपूजाविसर्जन ॥ धनलाहागियकर
 ॥ धनअइवालपहनेस्वद्यल्लिमिवाअ
 कथगककायदिलामधनखादा ॥ धनस्व
 सिधिनसग्वरवाचकअवलहाम्ननमा
 पववल्कलसा ॥ धनपप्रवायाअकथन
 यगमनहस्यगुवमधुलदकनल ॥ धनविषयनिसनपिदसमूदनलय ॥ सर्वकर्मिल्लनहानया

तक ॥ वाक्य ॥ जन्ममर्त्यं सरुतस्य जिनप्ररुन सखुडनाय महासूराधिकन ॥ श्रीनक्षत्रं रुवडिनस्य विनविनस्य कर्मर्त्यं रुवडिनस्य पर्वमाहिष थरुहयाडाथडाथयसंगयाव पर्वगयाः गमरिषकविय ॥ थनपूद्रग आदिनजूल नवग्रहदानकायवाक्य ॥ विप्र ॥ आदीस्य काभ्यपेगमगायजुर्विकिगर्हसंरुगाय अमिताहकलदवगायदानपर्वजुमूकस्य आयूगामाय	क ॥ थनं लिताउयाजानकं वसालायावः विय ॥ थनवसु दिगमास्यलज्जाय ॥ कं कावदिगमास्यलज्जाय नयक ॥ थने २८ यास्वीवासावासा ॥ वाक्य ॥ उं आदित्याय
---	--

कामनार्थं सर्वभागप्रभक्त्यर्थं वज्रकयटिक्तसवत्सधनूदानं दुखमर्हसंप्रयच्छामि ॥ सवत्सधनूप्रः तिष्ठार्थं संप्रदोक्त्या मित्रिदीपारुदक कीलशीख ॥ वाक्य ॥ उं सामायकीयादाह कस्य आयूगामाग्य कामनार्थं सर्वभागप्रभ दामि ॥ शीखदकधप्रतिष्ठाधर्मसंप्रदोक्त्या यूकाथुसा ॥ वाक्य ॥ उं श्रीगगायरुमीरुताय छुवदवगायदानपर्वजुमूकस्य आयूगामाग्य काम	धनवर्ध ॥ १ ॥ आचार्य ॥ सामयाधतः वसंरुगायधसवतदेवगायदानपर्वजुमू क्त्यर्थं वज्रकयटिक्तशीखदुखमर्हसंप्रयः मि ॥ विहिपारुव ॥ २ ॥ विप्र ॥ जूगमि
---	--

नार्थसर्वभागप्रभान्तर्यवज्जगद्यटिकदुस्यमहं संप्रयच्छामि यज्जगद्यटिकं नूनं नान्यप्रतिद्वार्थसंप्रः
 होकयामाहं ॥ विहिषाणुदकृष्णवः ॥ ३ ॥
 उद्वेगवत्सामस्तुतायवाहिनीपूजायवज्ज
 गद्यकामनार्थसर्वभागप्रभान्तर्यवज्ज
 कृष्णप्रतिद्वार्थदकृष्णसंप्रयच्छामि ॥
 हस्यमित्या ॥ कृष्णपोकवास्यगुल्ले ॥ वाय ॥ उद्वेगवत्सामस्तुतायवज्जगद्यटिकं नूनं नान्यप्रतिद्वार्थसंप्रः
 आचार्य ॥ वृद्धयाविहिन्नेकालं ॥ वाय ॥
 सूर्यदेवतायदानपकृष्णमूकस्य आचूरा
 कृदकृष्णदुस्यमहं संप्रयच्छामि ॥ स्वर्गद ॥
 विहिषाणुदकृष्णवः ॥ ४ ॥ आचार्य ॥ व
 हस्यमित्या ॥ कृष्णपोकवास्यगुल्ले ॥ वाय ॥ उद्वेगवत्सामस्तुतायवज्जगद्यटिकं नूनं नान्यप्रतिद्वार्थसंप्रः

नांगुत्पाध्याययज्जगद्यटिकदुस्यमहं संप्रयच्छामि ॥ वृद्धयाविहिन्नेकालं ॥ वाय ॥
 संप्रयच्छामि ॥ वृद्धयाविहिन्नेकालं ॥ वाय ॥
 विहिषाणुदकृष्णवः ॥ ५ ॥ आचार्य ॥ व
 युक्तायवज्जगद्यटिकदुस्यमहं संप्रयच्छामि ॥ वृद्धयाविहिन्नेकालं ॥ वाय ॥
 कामनार्थसर्वभागप्रभान्तर्यवज्जगद्यटिक
 कृष्णप्रतिद्वार्थदकृष्णसंप्रयच्छामि ॥ विहिषाणुदकृष्णवः ॥ ६ ॥ विप्र ॥ गते अवयाविहिमासकयगुल्ले ॥

वाक् ॥ ॐ ॥ निधाय सुखसुताय दद्यात्तु सर्वं सुखं यद्विष्णुविषयं सैव सुखं यज्जुः कालं देवताय दानं परं ज्ञ
 युवावाग्धकामनार्थं सर्वं वागप्रभं न्यर्थं कुरु
 नंदुखी निर्यातयामि ॥ ॐ ॥ सर्वं वज्रं कथं विदितं ध
 वं ॥ १ ॥ विप्रं ॥ वाहया ॥ विहीन्या कुरु
 सुताय ज्ञं मृतप्रियाय कुरु लिखितं वदेवताः
 पुष्पं न्यर्थं वज्रं कथं विदितं खड्गं दानं दुखं मर्हं निर्यातयामि ॥ ॐ ॥ सुदं कुरु प्रसिद्धार्थं संप्रदो कयामि ॥ विदि

पाण्डु कुरु ॥ ६ ॥ विप्रं ॥ कुरुया ॥ विदि कुरु ज्ञं यवामुर्गं कालं स ॥ वाक् ॥ ॐ ॥ कुरु वदकाग सुताय ख
 प्रपाशाय प्रहृष्टाय खड्गं कुरु देवताय दान
 र्थं वज्रं कथं विदितं दृगदानं दुखं मर्हं संप्रयच्छ
 शोकयामि ॥ विदि पाण्डु दक्षिणं व ॥ २ ॥ ॥ दु
 ॥ जन्म न जन्म न कुरु देवताय वदकाग सुताय
 युवावाग्धकामनार्थं सर्वं वागप्रभं न्यर्थं वज्रं कथं विदितं सथा दानं दुखं मर्हं संप्रयच्छामि ॥ ॐ ॥ सर्वं वज्रं कथं वि

ॐ नमः श्री कृष्ण सत्ताय ॥ ॥ वलन्यासविधानमाह ॥ मधुलपाता तजानि डाल मूलवली लखवली
 पक्वगव्य ऊरुसहितनक्तसंयननाग
 न ७ वा ॥ पूजा रुद्रजापयके ॥ गुर्वसंधु
 विसर्जनसमाधिस्तुतसंयननागध
 यित्तसिद्धकथाथनरुद्रा ॥ अग्निष्ठापन ॥
 दधूकथासंग ॥ तच्छ ॥ शिपसि ॥ दाकत्रगिनि ॥ श्रीखधु ॥ लूसिंह ॥ रुद्र ॥ पक्ववत्न ॥ नूपल ॥ आक्ष
 ३३

पलनकापूर्य ॥ पूजायाय ॥ जापमनु ॥ ॐ सिंज ॥ १ ॥ पूर्वस ॥ रुद्रमनगील ॥ शिकत्रकिल ॥ क
 रुनी ॥ लूसिंह ॥ नील ॥ पक्ववत्न ॥ लूपल
 रुद्र ॥ २ ॥ दक्षिनस ॥ रुद्र ॥ रुद्रिकाल ॥ की
 नत्न ॥ लूपल ॥ अक्षपलनकापूर्य ॥ पूजा मनु
 गुलि ॥ कुरु ॥ कर्पूर ॥ लूसिंह ॥ पक्व
 जामनु ॥ ३ ॥ ४ ॥ उरुवत्न ॥ मास ॥ लिलाधूमि ॥ अक्षरुद्र ॥ गीव ॥ लंगरुद्र ॥ मल ॥

पञ्चवत्त॥ लंपल॥ आहापलनकापू॥ पूजामनु॥ अं हं जं॥ ५ ॥ वाक्कपर्वस॥ हायूसल॥ लसीजना॥
जुंजुनादुलि॥ संख॥ पञ्चवत्त॥ लंपल॥
जिनीहं॥ ६ ॥ वाक्कदक्षिनस॥ मूंग॥
रूपल॥ आहापलनकापू॥ पूजाया॥ म
थिसस॥ खानड॥ सुवधुमादिधायलका
पञ्चवत्त॥ लंपल॥ आहापलनकापू॥ पूजामनु॥ उं धर्मवजिनीजी॥ ७ ॥ वाक्कडहवस॥ अयूका॥

१ कं समादिक्कधायकयकालाखि॥ जदमासि॥ वरदुलि॥ वं॥ पञ्चवत्त॥ लंपल॥ आहापलनकापू॥
पूजामनु॥ उं कर्मवजिनीजी॥ २ ॥ अ
मलव॥ गथडान॥ मुनि॥ पञ्चवत्त॥ रूपल॥
गारु॥ १० ॥ नेअव॥ निसि॥ धियंगु
पञ्चवत्त॥ लंपल॥ आहापलनकापू॥ पू
वस॥ हामल॥ सिध॥ गुम्पाल॥ सलप॥ वेइर्य॥ पञ्चवत्त॥ आहापलनकापू॥ पूजामनु॥ उं वजः

एकानस॥ कावात॥ आदुदिपमि॥ जिने॥
आहापलनकापू॥ पूजामनु॥ उं वजला
दुनिक॥ जिनेसल॥ आवगनसि॥ रिम्मा॥
जामनु॥ उं वजमालकां॥ ११ ॥ वायू

ॐ गीतार्जुन ॥ १२ ॥ अस्मान्महाकथगुलि ॥ कथं ॥ वडा ॥ काथपले ॥ रुद्रघो ॥ क्रव ॥ पवत्रल
 ॐ ॥ रूपव ॥ अहापवनकापूय ॥ पूजामनु ॥ १३ ॥ ध्वजकादहा
 ॐ काथसविही ॥ अहुओवधि ॥ गन्ध ॥ रूपले ॥ अ
 ॐ ॥ मनुनजापयाय ॥ धाव ॥ १०५ ॥ यथापहावपू
 ॐ ॥ अयिलसि ॥ वनिकाथन ॥ इत्ता ॥ ॥ यिल
 ॐ ॥ दण्ड ॥ मन्माग ॥ हामा ॥ क्रिया ॥ धन ॥ थ ॥ हाडा ॥ हाडा ॥ वतन्या ॥ मया ॥ य ॥ यिलसि ॥ वनिकाथन ॥ इत्ता ॥ मजाक ॥ थ

हामयाय ॥ अस्मा ॥ इति ॥ धूनडा ॥ पूर्वयादवपूजा ॥ इवका ॥ इति ॥ धूनडा ॥ अरुला ॥ उरुम ॥ कटन ॥ पूसी ॥ वडा ॥ य
 ॐ सहि ॥ रुयादडा ॥ काथ ॥ स ॥ वतन्या ॥ मया ॥ य ॥ य
 ॐ यिलसि ॥ वनिकाया ॥ हा ॥ स ॥ य ॥ थ ॥ अ ॥ डा ॥ सू ॥ व ॥ थ ॥ पू ॥ प
 काथन ॥ ला ॥ ॥ धन ॥ खान ॥ द ॥ ल ॥ ल ॥ य ॥ क ॥ हा ॥ व ॥ न
 काल ॥ र्ज ॥ वि ॥ द ॥ द ॥ ल ॥ प ॥ र्ज ॥ न ॥ इ ॥ प ॥ मि ॥ न ॥ ॥ काल ॥ र्ज
 न ॥ स ॥ ख ॥ स ॥ द ॥ दि ॥ र्ज ॥ कि ॥ ल ॥ ना ॥ ना ॥ नि ॥ र्ज ॥ क ॥ थ ॥ म ॥ ग ॥ ना ॥ दि ॥ क ॥ व ॥ स ॥ ज ॥ ले ॥ व ॥ रि ॥ वि ॥ र्ज ॥ ॥ ॥ पा ॥ या ॥ दि ॥ नी ॥ लो ॥ र्ज ॥ ना ॥ इ

लकवेसथयमनुः॥ ॐ वसुधैवा
कीलयाय॥ ॐ अन्नं विनो ज्ञाहा॥
थसासुधन॥ ॐ वज्रमनेलुमाकीः
दय २ स्वाहा॥ वाताकधन॥ ॐ धर्मका
स्वाहा॥ पिकाय॥ ॐ सुप्रतिष्ठितवज्र

हा॥ वाकाय॥ ॐ वज्राकवायस्वाहा॥ च
यकनसथने॥ ॐ वज्रधनुगर्हस्वाहा॥
दय २ स्वाहा॥ वा विने॥ ॐ वज्रकलिक
उगर्हस्वाहा॥ अकनथने॥ ॐ धर्मवत
स्वाहा॥ आसनसकय॥ ॥

१६ वज्रधयातदयकलीमथडाहिनदयकमाववसुधैवामधुलस्वाहातासनरुमीसवाकनाक
कमधुलवायादयकाडाधयाधानधायज्जलमहारुयहननविद्रकनसंय ८ डयकं वरवविपत
कमानीसुठकास्वासुकानेडयकं प्रति
यातलचकिन १२ हर्यविम्वडाहावकी
नवियनवग्रहदानमृचानसादानडाकनयाकवियदवप्रतिमादयकमहाजघनवसुधैवा

मकीदयक दशकर्मप्रतिष्ठा उत्तिश्या द्वाहास्वानं कुचकधनसवाक्यी वसंधमाधारीपीध १०५
 वाक्यध ॥ ॐ नमः श्रीवसंधमाधारी ॥ ॥ ॐ स
 पूर्णामाय २॥ ॐ वय २॥ सुसुय २॥ वधय २॥
 दृष्टदृष्टस्वाहा ॥ ॥ नवग्रमधुर्लम् ॥
 नवाकिसकलीहीमवधत्थं श्रुतागुरुं ॥ ॥ (महावहीमवधत्थं श्रुतागुरुं ॥ ॥

ॐ ३ सर्ववृक्षगकिनीय वज्रवर्धनीय वज्रवेनाचनीय हूं ३ रुद्र ३ रुद्र
 ॐ ३ सर्ववृक्षगकिनीय
 वज्रवर्धनीय
 वज्रवेनाचनीय हूं ३ रुद्र ३ रुद्र
 हा हूं स्वाहा

II-158

धर्मरत्न बज्राचार्य सुरत श्री महाविहार

ॐ ३ हा सर्ववृद्धा किं नीय वज्र चर्द्धनी ध्वज वं गोचनी यं ३
रुद्र ३ वृद्ध च यत् स्वा २५ पुर्वं होः ३ व्याहारा लय गुति यं

सतमेदि. पालु. चि. चाकु. मीकु. मि. मधु. को. त्रभा. को. गुज. गवय. गदा. लाये. आ. वा.